सीखने को सुदृढ़ बनाने के लिए सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ | उदय स्कूल, सवाई माधोपुर, राजस्थान

विष्णु गोपाल

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र (GSK)[i] बच्चों के साथ उदय सामुदायिक स्कूल के माध्यम से वर्ष 2005 से काम कर रहा है। हमें अपने काम के माध्यम से यह एहसास हुआ कि यदि बच्चों को और बेहतर सीखना है तो कक्षाओं में होने वाली प्रक्रियाओं के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने के बाद भी, उन्हें अन्य रणनीतियों के द्वारा सुदृढ़ करने की ज़रूरत है। शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों से आगे जाकर ऐसे अवसर पैदा करने की ज़रूरत है जो बच्चों को उनकी अपनी समझ विकसित करने और अपनी दुनिया खोजने में मदद कर सकें। जब बच्चे किसी विचार को मूर्त रूप देने के लिए प्रोत्साहित किए जाते हैं तब उनके पास अलग-अलग विषयों में सीखी गईं अलग-अलग चीज़ों को एक साथ लाने और उनके बीच कड़ी बनाने का अवसर होता है। इस प्रक्रिया से वे कक्षा में सीखी गई चीज़ों को आत्मसात करने और समाहित करने में सक्षम होते हैं, जो कि शायद विषय-विशिष्ट सत्र आधारित कक्षायी पढ़ाई से सम्भव न हो।

इस लेख में हम कुछ उन तरीक़ों और रणनीतियों को साझा कर रहे हैं जो हम उदय स्कूलों में अपनाते हैं।

> ग्रामीण शिक्षा केन्द्र ने उदय सामुदायिक स्कूलों के माध्यम से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में तरह-तरह की गतिविधियों की शुरुआत करने को एक प्रथा बना लिया है, जो सीखने को सुदृढ़ बनाने में मदद करती हैं। हमारा यह मानना है कि सीखने को कई रणनीतियों द्वारा सशक्त करने की ज़रूरत है और यह महज़ पाठ्यपुस्तकों से सीखने तक सीमित नहीं है। जॉन डुई भी सीखने में अनुभवों के महत्त्व पर ज़ोर देते हैं। हमारी रणनीतियाँ कक्षाओं में अर्जित विषयों के ज्ञान को व्यावहारिक उपयोग में तब्दील करने में मदद करती हैं। इससे विद्यार्थियों को ज्ञान को अपनाने, आत्मसात करने और नई स्थितियों में लागू करने में सहायता मिलती है। यह दृष्टिकोण गार्डनर के बहु-बुद्धिमता सिद्धान्त से भी प्रभावित है।[ii]

कुछ पद्धतियाँ और रणनीतियाँ

इससे पहले कि हम इन गतिविधियों के विस्तार में जाएँ, यहाँ पढ़ रहे बच्चों की पृष्ठभूमि को समझना महत्त्वपूर्ण है। सवाई माधोपुर भारत के 100 बेहद पिछड़े ज़िलों में से एक है। इस इलाक़े की शिक्षा गुणवत्ता ख़राब होने के कारण समुदाय के लोग सोचते थे कि पढ़ाई व्यर्थ है क्योंकि यह बच्चों को न तो सरकारी नौकरी दिलवाती है और न ही खेती के लायक बनाती है। स्कूली शिक्षा सरकारी स्कूलों में रटने और शारीरिक दण्ड और निजी स्कूलों में यूनिफ़ॉर्म और अँग्रेज़ी माध्यम में पढ़ाई मात्र के रूप में ही पहचान बनकर रह गई थी। सीखने का आनन्द और स्कूली शिक्षा एवं जीवन के बीच की कड़ी ग़ायब थी। GSK की स्थापना शिक्षा एक वैकल्पिक मॉडल दर्शाने और पालकों को शिक्षा का औचित्य (या उपयुक्तता) बतलाने के लिए की गई थी। कुछ गतिविधियाँ जो बच्चों के साथ की जाती हैं :

- *संगीत और तुकबन्दी* : संगीत और तुकबन्दी बच्चों को और अधिक खुलेपन और मुक्त रूप से ख़ुद को व्यक्त करने और दूसरों से वाद-संवाद करने में मदद करते हैं। संगीत सीखने का रियाज़ बच्चों का भाषा कौशल बढ़ाता है और उनकी अभिव्यक्ति और उपयोग में विविधता लाने में मदद करता है।
- *रचनात्मक लेखन* : रचनात्मक लेखन, सीखने और अभिव्यक्ति का अभ्यास करने का एक प्रमुख अवयव है। हम बच्चों के लिए लिखने का अभ्यास करने के अवसर उत्पन्न करते हैं ताकि वे अपनी कल्पनाशक्ति विकसित कर सकें, दुनिया को अलग ढंग से देख सकें, भाषा की बारीक़ियों को समझ सकें और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वे इसका आनन्द लेना सीख सकें।
- *कला* : उदय में सभी बच्चे दृश्य कला (visual arts) और मंचन या निष्पादन कला (performing art) दोनों ही में शामिल रहते हैं। ब्लैकबोर्ड पर बने चित्रों की नक़ल करने के बजाय रंगों के साथ खेलना और नए रंगों को बनाना बच्चों को स्वयं को अधिक विशुद्ध रूप से व्यक्त करने में मदद करता है। रंगमंच को कला के एक ऐसे जीवन्त रूप में देखा जाता है जिसमें बच्चे अपने शरीर का उपयोग अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए करते हैं – रंगमंच के द्वारा बच्चे कई क़िरदारों का जीवन जीते हैं और उनके बारे में अपनी स्वयं की एक समझ बनाते हैं। बच्चे

जो कहानियाँ पढ़ते हैं, उन्हें उन कहानियों को नाटकीय के रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। नृत्य भी स्कूल की नियमित दैनिक गतिविधियों का हिस्सा है। इनमें से अधिकांश कलात्मक अभिव्यक्तियाँ कक्षा में सीखने से प्रेरित हैं।

- *हाथों से काम करना :* उदय स्कूल में नियमित रूप से सभी बच्चे बढ़ईगीरी और चाककला (मिट्टी से बर्तन आदि बनाना) का काम करते हैं। बढ़ईगीरी उन्हें कलात्मक तत्वों से परिचित कराती है और उन्हें गणित और विज्ञान में सीखे गए सिद्धान्तों को वास्तविक जीवन में लागू करने में भी मदद करती है। चाककला के अभ्यास के दौरान जब विद्यार्थी मिट्टी से तरह-तरह की आकृतियाँ बनाते हैं और फिर उन्हें तोड़कर उसी मिट्टी से फिर से नई आकृतियाँ बनाते हैं, तो वे एक ही सामग्री से नई-नई आकृतियाँ बनाकर अस्थायित्व और पुनर्निर्माण का अनुभव करते हैं।

- *पाठ्यपुस्तकों से परे :*

- एक्सपोज़र विज़िट विद्यार्थियों को उनके आस-पास के मुद्दे से जुड़ने और उन पर चर्चा व बहस करने के मौक़े देती हैं। ये मुद्दे उन विषय से सम्बन्धित होते हैं जिनका वे अध्ययन कर रहे हैं और दूसरे गाँवों, खेतों, वन क्षेत्रों, विशिष्ट कृषि क्षेत्रों, सरकारी कार्यालयों, औद्योगिक इकाइयों आदि से सम्बन्धित हो सकते हैं।

- विद्यार्थी एकल और समूह प्रोजेक्ट पर भी काम करते हैं जो उन्हें एक विचार को अमल में लाने में मदद करता है। साथियों से सीखना, योजना बनाना, समन्वय करना, संचार और क्रियान्वयन परियोजना कार्य के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं, जो बच्चे करते हैं।

- विद्यार्थियों को व्यापक क्षेत्रों के लोगों जैसे मज़दूरों, किसानों, जन प्रतिनिधियों, दुकानदारों और सरकारी अधिकारियों से मिलने और उनके साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे इन विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के काम और उनकी दुनिया को समझ सकें। साथ-ही-साथ बच्चों को इस मुलाक़ात की तैयारी साक्षात्कार के माध्यम से करने और इस बातचीत से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

- *प्रकृति से जुड़ाव :* बच्चे मौसमी सब्ज़ियाँ उगाते हैं और बीज बोने से लेकर उनके पेड़-पौधे बनने, उनमें फल आने और उनसे बीज तैयार करने तक के सफ़र को देखते-समझते हैं। वे पोषकों, उनके लाभ और कृषि कार्यों में उनके महत्त्व के बारे में सीखते हैं। खाद्यान्न उगाने से उनकी विषय के बारे में समझ मज़बूत होती है और यह एक मज़ेदार अनुभव होता है। इसकी एक स्वाभाविक प्रगति 'कुकिंग क्लब' है जहाँ वे देश के विभिन्न प्रान्तों के व्यंजन बनाना सीखते हैं और उन प्रान्तों के लोगों के बारे में जानते हैं।

- *खेल :* उदय स्कूलों में बच्चों के दिन का एक ज़रूरी भाग खेल पीरियड भी है। बच्चे किसी भी एक खेल या अपनी पसन्द के किसी एक गेम को खेलते हैं; ये खेल एकल या सामूहिक, इनडोर या आउटडोर कुछ भी हो सकते है। यहाँ इस बात की गुंजाइश और सम्भावना रहती है कि जो बच्चे किसी खेल (या खेल में कैरियर) के प्रति गम्भीर हैं उन्हें अधिक अभ्यास करने के लिए अतिरिक्त समय मिले। खेल विद्यार्थियों में टीम वर्क, नेतृत्व, समन्वय, निर्णय लेने, रणनीति बनाने, रणनीति अपनाने और अपने प्रदर्शन का मूल्यांकन करने को बढ़ावा देते हैं और इन सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि खेल अपने साथियों से फ़ीडबैक लेने और उन्हें देने के लिए तैयार और तत्पर बनाते हैं। खेल को सम्मान के साथ हारना सीखने और हार से उबरना सीखने के रूप में भी सराहा जाता है।

- *विज्ञान प्रदर्शनियाँ :* उदय स्कूल में बच्चे स्कूल में जो कुछ भी सीखते हैं उसे मॉडल या अन्य रूपों में ढालने की कोशिश करते हैं, जो उनकी समझ/ सीख को दर्शा सकती है। प्रत्येक स्कूल में वार्षिक विज्ञान प्रदर्शनी एक नियमित आयोजन है। दूसरों को समझाने से विद्यार्थियों को अवधारणाओं को अधिक गहराई से समझने में मदद मिलती है। इससे उन्हें उन प्रश्नों को स्पष्ट व्यक्त करने में भी मदद मिलती है जिन्हें वे पूछना चाहते हैं। प्रदर्शनियाँ साथियों से सीखना भी सिखाती हैं और माता-पिता को अपने बच्चे की शिक्षा के बारे में जागरूक रहने में मदद करती हैं।

- *स्कूल प्रशासन :* स्कूल में सालाना स्कूल-पंचायत चुनाव आयोजित किए जाते हैं जिससे बच्चों को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का अनुभव होता है।

कई गतिविधियों का प्रबन्धन

पाठक में इस बात को लेकर जिज्ञासा हो सकती है कि स्कूल की समय-सारिणी में इतनी सारी गतिविधियों को कैसे शामिल किया जा सकता है। उदय स्कूल प्रतिदिन छह घण्टे लगते हैं, इस दौरान बच्चों को औपचारिक शिक्षा दी जाती है। स्कूल का बाक़ी दिन उन सुदृढ़ीकरण गतिविधियों को करने में जाता है जिनका हमने ऊपर वर्णन किया है। कुछ विषयों की कक्षाएँ प्रतिदिन होती हैं, कुछ की साप्ताहिक, कुछ की मासिक और यहाँ तक कि कुछ की वर्ष में एक बार भी होती हैं। अधिकांश क्लब मीट स्कूल के समय के बाद की होती हैं और अक्सर विद्यार्थियों द्वारा चलाई या प्रबन्धित की जाती हैं। जहाँ ज़रूरत पड़ती है वहाँ शिक्षक मदद कर देते हैं।

सारी गतिविधियाँ मिश्रित-लिंग समूहों में आयोजित की जाती हैं। इनमें से कुछ गतिविधियाँ विषय सम्बन्धी ज्ञान को मज़बूत करती हैं और कुछ सीखने को बढ़ावा देने वाला नज़रिया विकसित करने पर केन्द्रित होती हैं। GSK का मानना है कि बच्चों को गतिविधियों (क्लब की तरह) के आयोजन का ज़िम्मा देने से नेतृत्व और संगठनात्मक गुणों के पहलुओं के साथ-साथ उनकी कक्षा में सीखने की क्षमता भी उभरती है।

हमारी पद्धति जिस एक मुख्य सिद्धान्त पर आधारित है वह है सम्बलन, जहाँ शिक्षक बच्चे को उन पहलुओं को सीखने में उसकी मदद करते हैं जो उसके विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है और इस तरह विद्यार्थियों की रोज़ाना की सीखने की योजना लागू की जाती है। यहाँ जो महत्त्वपूर्ण है वह है पद्धति को सराहना – GSK इन सह-शैक्षणिक गतिविधियों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के ही अभिन्न अंग के रूप में देखता है, जो स्कूल में बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है। इसका मतलब यह है कि चाहे वे कितनी भी सरल क्यों न हों अमल में श्रम और समय का ख़्याल रखा जाता है, ताकि वे पाठ योजना का ही हिस्सा रहें न कि अलग से जोड़ी गई गतिविधियाँ बनें। इसी के चलते यह सुनिश्चित होता है कि सुदृढ़ीकरण हर स्तर पर हो रहा है।

पद्धति का क्या अर्थ है

हमारी पद्धति की सार्थकता यह सुनिश्चित करने के महत्त्व में है कि बच्चे ने कक्षा में और उसके बाहर जो कुछ भी किया है वह उसे समझे और उससे गहन सबक़ ले। उदाहरण के लिए, विज्ञान प्रदर्शनी में आगंतुकों को अपने मॉडल के बारे में समझाने का मतलब है कि बच्चे उसके पीछे के सिद्धान्तों को जानते और समझते हैं। वार्षिक स्कूल पंचायत कक्षा में नागरिकशास्त्र सीखने को सुदृढ़ करती है। कुकिंग क्लब यह सुनिश्चित करता है कि बच्चे देश के विभिन्न हिस्सों से पाकविधि लेकर, जिससे देश के बारे में उनका ज्ञान समृद्ध होता है, सब्ज़ियों की देखभाल के अपने अनुभवों को सबल करें। खेल हारने के बावजूद ख़ुद को बेहतर करने की चुनौती देने के लिए तैयार करता है। सह-शिक्षा (कोएड) कक्षाएँ समानता और लोकतंत्र के विचारों को सुदृढ़ करते हैं जो आज की दुनिया में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

आभार : लेख को लिखने में सहयोग देने के लिए लेखक ज्योत्स्ना लाल के आभारी हैं।

टिप्पणियाँ :

i. ग्रामीण शिक्षा केन्द्र राजस्थान के सवाई माधोपुर और टोंक ज़िलों में बच्चों और उनके माता-पिता की ज़रूरतों और आकांक्षाओं के लिए शिक्षा के पारिस्थितिकी तंत्र को अधिक अनुकूल बनाने के लिए काम करता है। पिछले 18 वर्षों की चिन्तनशील और सबक़पूर्ण यात्रा ने हमें कई पहल करने के लिए प्रेरित किया है। हमारा मुख्य कार्यक्रम उदय सामुदायिक स्कूलों के इर्द-गिर्द ही केन्द्रित है, जिन्हें समुदाय और अन्य स्कूलों को यह दर्शाने के लिए स्थापित और डिज़ाइन किया गया था कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कैसी हो सकती है।

ii. हार्वर्ड के मनोवैज्ञानिक हॉवर्ड गार्डनर का सिद्धान्त है कि लोगों के पास न सिर्फ़ बौद्धिक क्षमता है, बल्कि उनके पास संगीत, पारस्परिक, स्थानिक-दृश्य और भाषायी बुद्धिमत्ता सहित कई अन्य प्रकार की बुद्धिमत्ता है।



विष्णु गोपाल ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान के निदेशक हैं। उन्हें स्कूलों और शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रबन्धन का अनुभव है। वह एक खेल प्रेमी भी हैं। उनसे *vishnu.gopal@graminshiksha.org.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रियेश गुप्ता **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय